# Class X
# (CBSE 2019)
# Hindi (A)
# Delhi (Set-2)

(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं- क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

**प्रश्न 1**

**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

आजकल दूरदर्शन पर आने वाले धारावाहिक देखने का प्रचलन बढ़ गया है। बाल्यावस्था में यह शौक हानिकारक है। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक निम्न स्तर के होते हैं। उनमें अश्लीलता, अनास्था, फैशन तथा नैतिक बुराइयाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं। छोटे बालक मानसिक रूप से परिपक्व नहीं होते। इस उम्र में वे जो भी देखते हैं। उसका प्रभाव उनके दिमाग पर अंकित हो जाता है। बुरी आदतों को वे शीघ्र ही अपना लेते हैं। समाजशास्त्रियों के एक वर्ग का मानना है कि समाज में चारों ओर फैली बुराइयों का एक बड़ा कारण दूरदर्शन तथा चलचित्र भी हैं। दूरदर्शन से आत्मसीमितता, जड़ता, पंगुता, अकेलापन आदि दोष बढ़े हैं। बिना समय की पाबंदी के घंटों दूरदर्शन के साथ चिपके रहना बिलकुल गलत है। इससे मानसिक विकास रुक जाता है, नज़र कमजोर हो सकती है और तनाव बढ़ सकता है।

(क) आजकल दूरदर्शन के धारावाहिकों का स्तर कैसा है?

(ख) दूरदर्शन का दुष्प्रभाव किन पर अधिक पड़ता है और क्यों?

(ग) दूरदर्शन के क्या-क्या दुष्प्रभाव हैं?

(घ) 'बाल्यावस्था' शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

**उत्तर**

**(क)** आजकल दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारवाहिक निम्न स्तर के होते हैं। उनमें परिपक्वता का अभाव होता हैं। उनमें अश्लीलता, अनास्था जैसी नैतिक बुराइयाँ होती हैं। इसका बुड़ा प्रभाव दर्शकों पर पड़ता है।
**(ख)** दूरदर्शन का दुष्प्रभाव सबसे अधिक छोटे बच्चों पर पड़ता है। इसका मुख्य कारण उनकी उम्र का कम होना है। इस उम्र में बच्चे जो देखते हैं, उसका सीधा प्रभाव उनके अपरिपक्व मानस पटल पर पड़ता है। बुड़ी आदतों को वे शीध्र ही अपना लेते हैं।
**(ग)** आत्मसीमितता, जड़ता, पंगुता, अकेलापन आदि दूरदर्शन के मुख्य दुष्प्रभाव हैं। दूरदर्शन के कारण लोग समय को कम

महत्व देने लगे हैं। घंटों दूरदर्शन के सामने बैठे रहकर अपने समय का व्यर्थ उपयोग करते हैं। बच्चों का सही मानसिक विकास नहीं हो पाता है।

**(घ)** बाल्यावस्था = बाल्य + अवस्था (अ +अ = आ) स्वर संधि।

**(ड.)** दूरदर्शन का दुष्प्रभाव अथवा दूरदर्शन समाज के लिए अभिशाप

प्रश्न 2

**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

कोलाहल हो

या सन्नाटा कविता सदा सृजन करती है

जब भी आँसू हुआ पराजित,

कविता सदा जंग लड़ती है

जब भी कर्ता हुआ अकर्ता

कविता ने जीना सिखलाया

यात्राएँ जब मौन हो गईं

कविता ने चलना सिखलाया

जब भी तम का जुल्म बढ़ा है,

कविता नया सूर्य गढ़ती है,

जब गीतों की फसलें लुटतीं

शीलहरण होता कलियों का,

शब्दहीन जब हुई चेतना

तब-तब चैन लुटा गलियों का

अपने भी हो गए पराए

यों झूठे अनुबंध हो गए

घर में ही वनवास हो रहा

यों गूंगे संबंध हो गए।

**(क)** कविता कैसी परिस्थितियों में सृजन करती है? स्पष्ट कीजिए।

**(ख)** भाव समझाइए 'जब भी तम का जुल्म बढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है।'

**(ग)** गलियों का चैन कब लुटता है?

**(घ)** 'परस्पर संबंधों में दूरियाँ बढ़ने लगीं' - यह भाव किस पंक्ति में आया है?

**(ङ)** कविता जीना कब सिखाती है?

**अथवा**

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर,
कब अंबर शोक मनाता है?
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाई फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर,

कब मधुबन शोर मचाता है?

जो बीत गई सो बात गई।

**(क)** 'जो बीत गई सो बात गई' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

**(ख)** आकाश की ओर कब देखना चाहिए और क्यों?

**(ग)** 'सूखे फूल' और 'मधुबन' के प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

**(घ)** टूटे तारों का शोक कौन नहीं मनाता है?

**(ङ)** आपके विचार से 'जीवन में एक सितारा' किसे माना होगा?

उत्तर

**(क)** कोलाहल हो या सन्नाटा हो किसी भी विकट परिस्थिति में कविता सृजन करती है।

**(ख)** जब-जब जीवन में अंधकार रूपी निराशाएँ बढ़ती हैं तब-तब कविता सूर्य की भाँति हमारे मन में आशा का संचार करती हैं।

**(ग)** कलियों के शीलहरण होने से मनुष्य की चेतना आहत होती है तब गलियों का चैन लुट जाता है।

(घ) अपने भी हो गए पराए

यों झूठे अनुबंध हो गए

घर में ही वनवास हो रहा

यों गूंगे संबंध हो गए।

**(ड.)** जीवन में कुछ भी गलत घटित होने पर या भ्रमित होने पर कविता जीना सिखाती है।

**अथवा**

**(क)** जो बीत गई सो बात गई का आशय यह है कि हमें बीते समय के विषय में अधिक नहीं सोचना चाहिए। बीता हुआ समय वापस नहीं आ सकता। ऐसा करने से हमारा कुछ लाभ नहीं होता है। अतः ऐसा करना व्यर्थ है।

(ख) रात्री के समय जब तारें टूटते हैं तब आकाश को देखना चाहिए। इस समय आकाश को देखने से हमें विकट परिस्थितियों में भी अपना धैर्य बनाए रखने की शिक्षा मिलती हैं।

**(ग)** 'सूखे फूल' बीते समय तथा 'मधुबन' जीवन का प्रतीक है।

**(घ)** 'अम्बर' टूटे तारों का शोक नहीं मनाता है।

**(ड.)** एक सितारा जीवन के किसी अत्यंत प्रिय व्यक्ति अथवा सुख को माना गया होगा।

**प्रश्न 3**

**निर्देशानुसार किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए-**

**(क)** मैंने उस व्यक्ति को देखा जो पीड़ा से कराह रहा था। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

**(ख)** जो व्यक्ति, परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है। (सरल वाक्य में बदलिए)

**(ग)** वह कौन-सी पुस्तक है जो आपको बहुत पसंद है। (रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए)

**(घ)** कश्मीरी गेट के निकल्सन कब्रगाह में उनका ताबूत उतारा गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

**उत्तर**

**(क)** मैंने उस व्यक्ति को देखा और वह पीड़ा से कराह रहा था।

**(ख)** परिश्रमी व्यक्ति अवश्य सफल होता है।

**(ग)** संज्ञा उपवाक्य

**(घ)** कश्मीरी गेट का जो निकल्सन कब्रगाह है, वहाँ उनका ताबूत उतारा गया।

**प्रश्न 4**

**निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए-**

**(क)** बालगोबिन भगत प्रभातियाँ गाते थे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

**(ख)** बीमारी के कारण वह यहाँ न आ सका। (भाववाच्य में बदलिए)

**(ग)** माँ के द्वारा बचपन में ही घोषित कर दिया गया था। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

**(घ)** अवनि चाय बना रही है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

**(ङ)** घायल हंस उड़ न पाया। (भाववाच्य में बदलिए)

**प्रश्न 5**

**निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए-**

**(क)** दादी जी प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ती हैं।

**(ख)** रोहन यहाँ नहीं आया था।

**(ग)** वे मुंबई जा चुके हैं।

**(घ)** परिश्रमी अंकिता अपना काम समय से पूरा कर लेती है।

**(ङ)** रवि रोज सवेरे दौड़ता है।

**उत्तर**

**(क)** सक्रर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एक वचन

**(ख)** स्थान वाचक क्रिया विशेषण

**(ग)** सर्वनाम, कर्ता

**(घ)** गुण वाचक विशेषण

**(ङ)** व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता, एकवचन

**प्रश्न 6**

**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

**(क)** 'करुण रस' का एक उदाहरण दीजिए

**(ख)** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित रस पहचान कर लिखिए-

तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप,

साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप।

घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,

धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।

**(ग)** 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?

**(घ)** 'वात्सल्य' रस का स्थायी भाव क्या है?

**(ङ)** 'श्रृंगार' रस के कौन से दो भेद हैं?

**उत्तर**

**(क)** वह आता--

दो टूक कलेजे को करता, पछताता

पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भर दाने को – भूख मिटाने को

**(ख)** हास्य रस

**(ग)** वीर रस

**(घ)** वत्सल

**(ङ)** संयोग श्रृंगार

वियोग श्रृंगार

**प्रश्न 7**

**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, "बाबा ! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।" खाँ साहब मुसकराए। लाड़ से भरकर बोले, "धत् ! पगली, ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब क्या रियाज़ हो पाता?"

**(क)** एक दिन एक शिष्या ने खाँ साहब को क्या कहा? क्यों ?

**(ख)** खाँ साहब ने शिष्या को क्या समझाया?

**(ग)** इससे खाँ साहब के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?

**उत्तर**

**(क)** एक दिन एक शिष्या ने खाँ साहब को फटी लुँगिया न पहनने को कहा। खाँ साहब को उनकी अद्वितिय प्रतिभा के कारण भारत रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया है। इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति का फटा कपड़ा पहनना उचित नहीं होता इसलिए शिष्या ने उन्हें फटी लुँगिया पहनने से मना किया।

**(ख)** खाँ साहब ने अपनी शिष्या को समझाया कि मनुष्य की प्रतिभा महत्वपूर्ण होती है न कि उसका पहनावा या बाहरी रुप।

**(ग)** इस प्रसंग से खाँ साहब के सादगी पूर्ण तथा दिखावा रहित व्यक्तित्व का पता चलता है। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त सरल तथा निश्छल था।

**प्रश्न 8**

**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -**

(क) पाठ के आधार पर मन्नू भंडारी की माँ के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) 'नेताजी का चश्मा' पाठ का संदेश क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'लखनवी अंदाज़' के पात्र नवाब साहब के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए।

(घ) फादर बुल्के को 'करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा गया है?

(ड.) लेखक ने बिस्मिल्ला खाँ को वास्तविक अर्थों में सच्चा इंसान क्यों माना है?

**उत्तर**

**(क)** लेखिका की माँ बेपढ़ी लिखी थी। उनमें जरूरत से अधिक धैर्य और सहनशीलता थी। अपने परिवार की प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करना वह अपना कर्तव्य समझती थीं। इसी कारण अपने पति की ज्यादती और अनुचित व्यवहार को भी सह लेती थीं। उनका दब्बू स्वभाव लेखिका को कभी अच्छा नहीं लगा।

**(ख)** 'नेताजी का चश्मा' पाठ के माध्यम से हमें यह संदेश दिया गया है कि हमें अपने देश, देश में व्याप्त स्थानों, वस्तुओं, अपनी संस्कृति, धरोहरों, विभूतियों इत्यादि से प्रेम करना चाहिए। कहानी पर विचार-विमर्श किया गया है कि देशभक्ति किसे कहते हैं? क्या केवल देश पर मर-मटना ही देशभित है? आज भी ऐसे लोग हैं, जो देश के लिए अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करते हैं। यह भी देशभक्ति का एक प्रकार है। हमें देश के अंदर रहकर अपने देश को स्थायित्व प्रदान करना चाहिए।

➽ हमें देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करना चाहिए।

**(ग)** खीरे को खाने की इच्छा तथा सामने वाले यात्री के सामने अपनी झूठी साख बनाए रखने के कश्मकश में नवाब ने खीरे को काटकर खाने की सोची तथा फिर अन्तत: जीत नवाब के दिखावे की हुई। अत: इसी इरादे से उसने खीरे को फेंक दिया। नवाब के इस स्वभाव से ऐसा लगता है कि वो दिखावे की जिंदगी जीते हैं। खुद को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए वो कुछ भी कर सकते हैं।

**(घ)** फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा की प्रतिमूर्ति थे। उनके मन में सभी के लिए प्रेम भरा था जो कि उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देता था। विपत्ति की घड़ी में वे सांत्वना के दो बोल द्वारा किसी भी मनुष्य का धीरज बाँधते थे। स्वयं लेखक की पत्नि तथा पुत्र की मृत्यु पर फ़ादर बुल्के ने उन्हें सांत्वना दी थी। किसी भी मानव का दु:ख उनसे देखा नहीं जाता था। उसके कष्ट दूर करने के लिए वे यथाशक्ति प्रयास करते थे।

**(ङ)** बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे इंसान थे। वे धर्मों से अधिक मानवता को महत्व देते थे, हिंदु तथा मुस्लिम धर्म दोनों का ही सम्मान करते थे, भारत रत्न से सम्मानित होने पर भी उनमें घमंड नहीं था, दौलत से अधिक सुर उनके लिए ज़रुरी था। इसलिए लेखक ने बिस्मिल्ला खाँ को वास्तविक अर्थों में सच्चा इंसान माना है।

**प्रश्न 9**

**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन -

छाया मत छूना

मन, होगा दुख दूना।

**(क)** 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कष्णा है' - इस पंक्ति से कवि किस तथ्य से अवगत करवाना चाहता है?

**(ख)** कवि ने यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

**(ग)** 'मृगतृष्णा' का प्रतीकात्मक अर्थ लिखिए।

**उत्तर**

**(क)** जीवन में सुख तथा दुख दोनों ही मौजूद है। सुख तथा दुख जीवन का सत्य है। दुख के बिना सुख आनंदरहित है। हमें दोनों के लिए तैयार रहना चाहिए।

**(ख)** यथार्थ पूजन से कवि का आशय यथार्थ को स्वीकार करना है। हमें कठिन यथार्थ को भी झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए।

**(ग)** 'मृगतृष्णा' छल तथा भ्रम का प्रतीक है।

**प्रश्न 10**

**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -**

**(क)** आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं। उक्त पंक्ति से क्या संदेश दिया गया है?

**(ख)** कवि अपने मन को 'छाया मत छूना' कहकर क्या समझाना चाहता है?

**(ग)** 'छू गया तुमसे कि झरने लगे सेफालिका के फूल'

उक्त पंक्ति का आशय नागार्जुन की कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

**(घ)** स्मृति को पाथेय बनाने से जयशंकर प्रसाद का क्या आशय है?

**(ङ)** परशुराम को लक्षमण ने वीर योद्धा के क्या लक्षण बताए हैं?

**उत्तर**

**(क)** इन पंक्तियों में समाज द्वारा नारियों पर किए गए अत्याचारों की ओर संकेत किया गया है। समाज में अक्सर नारी को जलाए जाने तथा जलकर आत्महत्या करने की बात सामने आती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नारी का जीवन कष्टों से भरा होता है। कविता में बेटी अभी सयानी नहीं थी, उसकी उम्र भी कम थी और वह समाज में व्याप्त बुराईयों से अंजान थी। माँ यह

नहीं चाहती थी कि उसके साथ जो अन्याय हुए हैं वो सब उसकी बेटी को भी सहना पड़े। इसलिए माँ ने बेटी को सचेत करना ज़रुरी समझा।

**(ख)** छाया शब्द से तात्पर्य जीवन की बीती मधुर स्मृतियाँ हैं। कवि के अनुसार हमारे जीवन में सुख व दुख कभी एक समान नहीं रहता परन्तु उनकी मधुर व कड़वी यादें हमारे मस्तिष्क (दिमाग) में स्मृति के रुप में हमेशा सुरक्षित रहती हैं। अपने वर्तमान के कठिन पलों को बीते हुए पलों की स्मृति के साथ जोड़ना हमारे लिए बहुत कष्टपूर्ण हो सकता है। वह मधुर स्मृति हमें कमज़ोर बनाकर हमारे दुख को और भी कष्टदायक बना देती है। इसलिए हमें चाहिए कि उन स्मृतियों को भूलकर अपने वर्तमान की सच्चाई को यथार्थ भाव से स्वीकार कर वर्तमान को भूतकाल से अलग रखें।

**(ग)** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'नागार्जुन जी' द्वारा रचित 'यह दंतुरित मुस्कान' पाठ से लिया गया है। इन पंक्तियों का आशय है कि बच्चे का स्पर्श पाकर कोई भी कठोर हृदय जल के समान पिघल जाए। बच्चे के स्पर्श से बाँस तथा बबूल जैसे काँटेदार वृक्ष से भी फूल झरने लगते हैं। उसी प्रकार बच्चे का स्पर्श पाकर कवि का भी नीरस मन प्रफुल्लित हो जाता है।

**(घ)** कवि की प्रेयसी उससे दूर हो गई है। कवि के मन-मस्तिष्क पर केवल उसकी स्मृति ही है। इन्हीं स्मृतियों को कवि अपने जीने का संबल अर्थात् सहारा बनाना चाहता है। अत: स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय स्मृति के सहारे से है।

**(ड.)** लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई है -

**(1)** वीर पुरुष स्वयं अपनी वीरता का बखान नहीं करते अपितु वीरतापूर्ण कार्य स्वयं वीरों का बखान करते हैं।

**(2)** वीर पुरुष स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते। वीरता का व्रत धारण करने वाले वीर पुरुष धैर्यवान और क्षोभरहित होते हैं।

**(3)** वीर पुरुष किसी के विरुद्ध गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते। अर्थात् दूसरों को सदैव समान रुप से आदर व सम्मान देते हैं।

**(4)** वीर पुरुष दीन-हीन, ब्राह्मण व गायों, दुर्बल व्यक्तियों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं। उनसे हारना व उनको मारना वीर पुरुषों के लिए वीरता का प्रदर्शन न होकर पाप का भागीदार होना है।

**(5)** वीर पुरुषों को चाहिए कि अन्याय के विरुद्ध हमेशा निडर भाव से खड़े रहे।

**(6)** किसी के ललकारने पर वीर पुरुष कभी पीछे कदम नहीं रखते अर्थात् वह यह नहीं देखते कि उनके आगे कौन है वह निडरता पूर्वक उसका जवाब देते हैं।

**प्रश्न 11**

'साना-साना हाथ जोड़ि' के आधार पर लिखिए कि देश की सीमा पर सैनिक किस प्रकार कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति भारतीय युवकों का क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

**अथवा**

'जार्ज पंचम की नाक' को लेकर शासन में खलबली क्यों थी? इसमें निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर**

हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वे वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। वे हमारे लिए अपने प्राणों का बलिदान करते हैं, एक सजग प्रहरी की तरह सीमा की रक्षा करते हैं। हमें चाहिए कि हम उनके व उनके परिवार वालों के प्रति सदैव सम्माननीय व्यवहार करें। जिस तरह वह अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हैं, हमें उनके परिवार वालों का ध्यान रख उसी तरह अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। उनका अनादार नहीं करना चाहिए, सदैव उनको अपने से पहले प्राथमिकता देनी चाहिए फिर चाहें वो किसी भी जगह हों। इसके द्वारा हम कुछ हद तक अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकते हैं।

**अथवा**

सरकारी तंत्र के आलस्य का यहाँ पर वर्णन किया गया है। सरकारी तंत्र तभी होश में आता है जब बात गंभीरता का रूप धारण कर लेती है। वह अपने कर्तव्य को सही ढ़ग से न निभाते हुए मीटिंग के हवाले समस्या को छोड़ देते हैं। अपनी ज़िम्मदारी को भली–भांति नहीं निभाते व ज़िम्मेदारी दूसरे विभाग पर डालते रहते हैं जिससे समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है।
सलाह–मशवरा तो उचे पैमाने पर करने की कोशिश करते हैं पर बुद्धि के मामले पर समस्या को सुलझा नहीं पाते। वे अपनी समस्याओं का हल बाहर ढूँढने के स्थान पर जंग लगी फाइलों का सहारा लेते हैं परन्तु इन फाइलों की इतनी बेकदरी होती है कि वो भी बर्बाद हो जाते हैं।

**प्रश्न 12**

**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए -**

**(क) कमरतोड़ महँगाई**

• महँगाई के कारण

• समाज पर प्रभाव

• व्यावहारिक समाधान

**(ख) स्वच्छ भारत अभियान**

• विकास में स्वच्छता का योगदान

• अस्वच्छता से हानियाँ

• रोकने के उपाय

**(ग) बदलती जीवन शैली**

• जीवन शैली का आशय

• बदलाव कैसा

• परिणाम

उत्तर

**(क) कमरतोड़ महँगाई**

आज के समय में मध्यमवर्ग को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आय के साधन सीमित होने से घर की आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो रही है और उस पर बढ़ती हुई इस महँगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ कर रख दी है। वैसे ही हमारे देश में अनेक समस्याएँ पहले से ही विराजमान है, अब महँगाई होना मध्यम वर्ग के लिए और भी भयानक स्थिति पैदा कर रही है। ये महँगाई एक रूप में नहीं है। आज खान-पान, वस्त्रों, घरेलू समानों, रेल टिकटों, हवाई जहाज यात्रा, और पेट्रोल व डीजल की कीमतों में दिखाई दे रही है। मध्यमवर्ग वैसे ही बेरोज़गारी व गरीबी की समस्याओं से आहत है। घर बड़ा है परन्तु घर की सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आय कम है, जिसके कारण वह गरीब और गरीब हो रहा है। उसके ऊपर पैट्रोल व डीजल की कीमतों के बढ़ने से उसके कन्धे पर एक बोझ और बढ़ गया है। यात्रा करना भी उसके लिए महँगा पड़ता जा रहा है। घर का किराया बढ़ता जा रहा है। आमदनी में इतनी बढ़ोतरी नहीं होती, जितनी जल्दी अन्य चीज़ों के मूल्यों में बढ़ोतरी हो रही है। जहाँ नज़र डालें महँगाई का आतंक दिखाई देता है। दूध, फल, सब्जियाँ, दालें, घर में प्रयोग होने वाला समान, कपड़े, जूते आदि में निरंतर वृद्धि हो रही है। आमदनी का दायरा सीमित है परन्तु महँगाई का असीमित। इससे लोगों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। लोगों को घर चलाने के लिए अन्य साधनों को तलाशना पड़ता है जिनसे और आमदनी प्राप्त हो सके। इससे उन पर शारीरिक दबाव बन जाता है। अधिक कार्य करने से शरीर पर विपरीत असर पड़ता है। इलाज करवाने जाता है, तो अस्पताल और दवाइयों का खर्चा उसको तंग करता है। महँगाई उसका पीछा नहीं छोड़ती। सरकार को चाहिए कि महँगाई को रोकें। सरकार का कार्य है देश और जनता की भलाई के लिए ऐसे कार्य करे जिससे देश और जनता का विकास हो सके। देश में रहते हुए लोग अच्छा जीवन गुज़ार सकें।

**(ख) स्वच्छ भारत अभियान**

देश के विकास में स्वच्छता का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यटन के दृष्टिकोण से अक्सर हमारे देश में विदेशी पर्यटक आते रहते हैं। अतः हमें अपने देश की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे विस्व स्तर पर हमारा देश विख्यात होगा। समाज में स्वच्छता बनाए रखना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

स्वच्छता का अपना ही महत्व है। इसे अपनाने से गंदगी दूर होती है। गंदगी के कारण कई बीमारियाँ फैलती है। इनसे बचने के लिए स्वच्छता अनिवार्य है। यदि भारत के सभी नागरिक स्वच्छता की ओर ध्यान देंगे, तो निश्चय ही भारत को स्वस्थ बनाया जा सकता है। देश को स्वच्छ रखना सभी नागरिकों का पहला कर्तव्य होना चाहिए। उन्हें इसके महत्व को समझते हुए अपने आस-पड़ोस को स्वच्छ रखना चाहिए।

कूड़ा आस-पास फैलने से रोक कर हम वातावरण को स्वच्छ रख सकते हैं। कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही रखें।

**(ग) बदलती जीवन शैली**

जीवन शैली से तात्पर्य मनुष्य के रहन-सहन का तरीका है आज मनुष्य की जीवन शैली में बहुत बदलाव आ रहे हैं। पहले मनुष्य के जीवन स्तर और आज के जीवन स्तर में बहुत अंतर है। पहले मनुष्य सादा जीवन और उच्च विचार अपनाता था।

आज कल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन है। यह परिवर्तन रहन-सहन, पहनावे में, भोजन में, भ्रमण करने इत्यादि सभी क्षेत्रों में हो रहा है। इससे मनुष्य मिश्रित संस्कृति की ओर बढ़ रहा है। मनुष्य विलासिता पूर्ण जीवन जीना चाहता है और आलसी होता जा रहा है। मनुष्य का स्वभाव स्वार्थी होता जा रहा है। अपने आप में सीमित होता जा रहा है। बाहरी दुनिया से अपने आप को दूर करता जा रहा है। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हमें समाज में ही रहना है। अत:, मनुष्य को मिलनसार, एक दूसरे के प्रति स्नेह और आदर का भाव रखना होगा तभी हम संस्कारी कहला सकते हैं।

**प्रश्न 13**

किसी बस में वारदात कर भाग रहे अपराधी को संवाहक द्वारा पकड़ कर पुलिस को सौंपने की घटना की विवरण सहित जानकारी देते हुए परिवहन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखकर कि उसे पुरस्कृत करने का अनुरोध कीजिए।

**अथवा**

आपकी बहन कस्बे से अपनी पढ़ाई पूरी कर आगे शिक्षा के लिए बड़े नगर में गई है। नगर के वातावरण में संभावित परेशानियों की चर्चा करते हुए उनसे बचने के तरीके उसे पत्र द्वारा समझाइए।

**उत्तर**

ए-1, मोती बाग,

नई दिल्ली।

दिनांक: ............

सेवा में,

मुख्य प्रबंधक,

दिल्ली परिवहन निगम,

नई दिल्ली।

विषय: बस कडंक्टर के प्रशंसनीय व्यवहार के लिए पुरस्कृत करने हेतु पत्र।

महोदय / महोदया,

मेरा नाम हेमंत है। मैं मोती बाग का निवासी हूँ। मैं कल 511 रुट नं. बस से नेहरु प्लेस जा रहा था। बस में बहुत सारे लोग थे। इसी बस में एक महिला अपने छोटे बच्चे को साथ में लेकर बैठी थी। रास्ते में ही बस में सवार एक व्यक्ति स्टैंड आते ही महिला के पास बैठे बच्चे को लेकर भाग रहा था। बस के संवाहक नें यह देख लिया। उसने समय बर्बाद न करते हुए तुरंत उस चोर को पकड़ लिया तथा बच्चे की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसे उसकी माँ को दे दिया। बस पर सवार सभी लोग उस चोर को मारना चाहते थे परंतु संवाहक ने अपनी सूझ-बूझ से मामले को संभालते हुए पास के पुलिस स्टेशन में उस चोर को पहुँचाकर मामला दर्ज करवा दिया है।

बस कंडक्टर का यह व्यवहार प्रशंसनीय है। अतः हम सभी को उससे प्रेरणा लेनी चाहिए। इस साहसिक कार्य के लिए उसे पुरस्कृत कर लोगों के समक्ष उसका आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप दिल्ली परिवहन निगम की तरफ़ से उसे सम्मानित कर पुरस्कृत करने की कृपा करें।

भवदीय,

हेमंत

**अथवा**

सी-40, मथुरा रोड,

नई दिल्ली।

दिनांक: ..............

प्रिय बहन मृणाल,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखना चाह रही थी परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं लिख पाई। आशा करती हूँ तुम वहां भली प्रकार से होगी। हमारे लिए यह बहुत गर्व की बात है कि तुम्हें अच्छे कॉलेज में पढ़ने का सुनहरा अवसर मिला है। ईश्वर से यही कामना करती हूँ कि जिस प्रकार तुम इतने छोटे स्थान से निकल कर बड़े शहर में जा सकी हो उसी प्रकार जीवन में आगे भी उन्नति करो। यह बात कभी मत भूलना कि वहाँ जाने का तुम्हारा लक्ष्य क्या है।

मृणाल विद्यार्थी जीवन पढ़ने-लिखने के लिए होता है। यही समय होता है, जब हम अपने भविष्य की नींव रखते हैं। अपना बहुमूल्य समय पढ़ने-लिखने के स्थान पर फैशन में व व्यर्थ के क्रियाकलापों में लगाना सही नहीं होगा। यदि तुम पढ़ाई-लिखाई छोड़कर फैशन के नाम पर समय नष्ट करती रहोगी, तो दिशा भटक जाओगी और अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ कर बैठोगी। पिताजी को हमसे बहुत आशाएँ हैं। हमारी शिक्षा में कोई बाधा ना आए, इसके लिए वह दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं। पढ़ाई पर ध्यान दे कर ही हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। और पिताजी का हाथ बटा सकते हैं।

आशा करती हूँ कि तुम मेरे इस पत्र को गंभीरता से लोगी और अपना ध्यान अपनी पढ़ाई में लगाओगी।

तुम्हारी बड़ी बहन

सुषमा

**प्रश्न 14**

अतिवृष्टि के कारण कुछ शहर बाढ़ ग्रस्त हैं। वहाँ के निवासियों की सहायतार्थ सामग्री एकत्र करने हेतु एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

**अथवा**

बॉल पेनों की एक कंपनी 'सफल' नाम से बाज़ार में आई है। उसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर

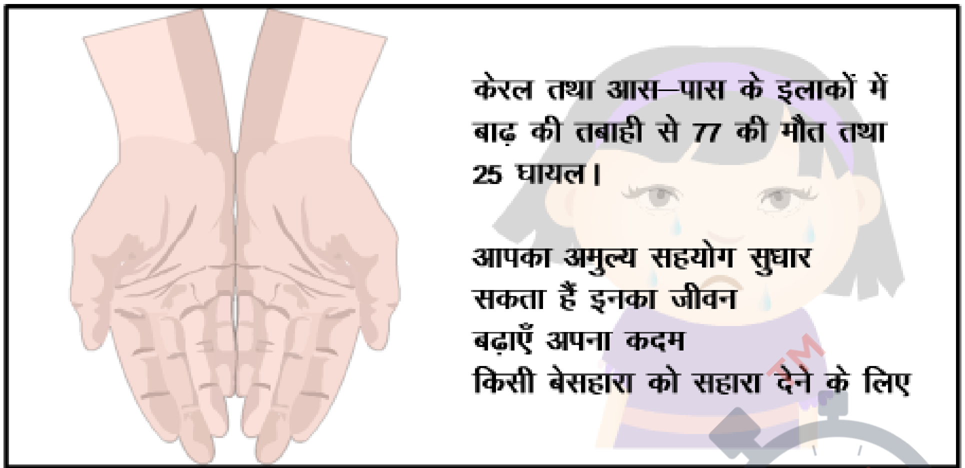


अथवा